ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 254-258
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

जनसंख्या संसाधन के संकल्पनात्मक आयाम : जौनपुर जनपद के विशेष सन्दर्भ में

डॉ0 अनुपमा दीक्षित

सहायक प्रोफेसर– भूगोल, दिग्विजयनाथ पी0जी0 कालेज, गोरखपुर (उ0प्र0) भारत

Received- 07.03.2022, Revised- 09.03.2022, Accepted - 14.03.2022 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः – ***जौनपुर जनपद उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में स्थित प्राचीन ऐतिहासिक जनपदों में से एक है। यह जनपद वाराणसी मण्डल के उत्तरी–पश्चिमी भाग में स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल 4040 वर्ग किमी0 तथा वर्ष 2011 के अनुसार कुल जनसंख्या 4476072 है। इस प्रकार जनपद का जनघनत्व 1108 प्रति वर्ग किमी0 है, जो राज्य के औसत जनघनत्व 828 से बहुत अधिक है। जनसंख्या के दशकीय वृद्धि का प्रतिशत 14.43 है एवं स्त्री–पुरुष अनुपात 1018 है जो प्रदेश में सर्वाधिक है। यहाँ जनसंख्या वृद्धि दर में निरन्तर कमी हो रही है। वर्ष 1991 में दशकीय वृद्धिदर 26.62 प्रतिशत तथा 2001 में 21.67 प्रतिशत थी जो घटकर 2011 में 14.43 प्रतिशत हो गई है, जो एक शुभ लक्षण है। इससे संसाधनों पर जनसंख्या का दबाव कम होगा एवं लोगों के जीवन स्तर में निरन्तर सुधार होगा। जनपद में साक्षरता का प्रतिशत 73.66 है जो प्रदेश के औसत साक्षरता से अधिक है। यह एक समतल मैदानी भाग है जिसमें गोमती नदी अपनी सहायक नदियों के साथ प्रवाहित होती है। फसल उत्पादन एवं तत्सम्बन्धी उद्योग ही यहाँ पर आजीविका के प्रमुख आधार है। व्यावसायिक फसल उत्पादन में वृद्धि कर इस जनपद में संसाधनों का अधिक विकास किया जा सकता है।***

कुंजीभूत शब्द– प्राचीन ऐतिहासिक, जनसंख्या, जनघनत्व, सर्वाधिक, संसाधनों, जीवन स्तर, साक्षरता ।

भूगोल के अध्ययन में मनुष्य केन्द्रीय बिन्दु है, क्योंकि समस्त आर्थिक क्रियाएँ इसी के द्वारा संचालित होती है। मनुष्य के सन्दर्भ में ही कोई वस्तु या दशा संसाधन का रूप ग्रहण करती है। मनुष्य उत्पादक, विनिमयकर्ता और उपभोक्ता अर्थात् एक बहुआयामी कारक के रूप में स्वीकार किया गया है। बिना मनुष्य के किसी क्षेत्र की विपुल प्राकृतिक सम्पदा अर्थहीन होती है। मानव की संख्या, कार्यपद्धति, सामाजिक–आर्थिक दशाएँ, शासन तंत्र आदि तत्व आर्थिक विकास की दिशा और दशा तय करते हैं। जनसंख्या में यदि उपभोक्तावादी प्रवृत्ति की प्रधानता होती है तो संसाधनों का दोहन अधिक होता है और इसीलिए संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता पड़ती है। लेकिन कम जनसंख्या बावजूद यदि संसाधनों का अपव्यय होता है, तो भी संसाधन संरक्षण आवश्यक हो जाता है। आज विश्व को विकसित, विकासशील और अविकसित वर्गों में बाँटने की प्रक्रिया संचालित है, जो संसाधन–दोहन द्वारा मानव समाज की आर्थिक उन्नति पर आधारित है। विकसित देश अपनी जनसंख्या की उपभोक्तावादी प्रवृत्ति के साथ उसे उत्पादक बनाने में सक्षम है, जिसके कारण वहाँ सामाजिक आर्थिक उन्नति अधिक हुयी है। विकासशील देश जनभार से बोझिल होने के साथ अपनी जनसंख्या को अधिक सक्षम एवं क्रियाशील बनाने में प्रयत्नशील है जबकि अल्प विकसित देश मानव संसाधन को विकसित करने में बहुत पीछे हैं, जिसके कारण वहाँ अनेक संसाधनों का उपयोग उचित मात्रा में नहीं हो पा रहा है। अतः विश्व में जनसंख्या की प्रवृत्ति एवं मानव संसाधन के स्वरूप में क्षेत्रगत विविधता पायी जाती है। विश्व में तीव्र जनसंख्या वृद्धि से जनांकिकीविदों एवं अन्य सामाजिक वैज्ञानिकों का ध्यान तत्सम्बन्धी समस्या के अध्ययन की ओर आकृष्ट हुआ है। इस परिप्रेक्ष्य में जो भी अध्ययन हुए है, उनमें जनसंख्या को एक समस्या के रूप में ही प्रस्तुत किया गया है, जबकि अब यह आवश्यक हो गया है कि इस दृष्टिकोण को बदला जाय तथा जनसंख्या को समस्या न मानकर उसे संसाधन के रूप समझा जाय। भूगोल में मात्रात्मक क्रान्ति ने जनसंख्या भूगोल को एक अलग शाखा के रूप में विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आज यह भौगोलिक अध्ययन की नवीन एवं विकासोन्मुख शाखा है जिसमें जनसंख्या को एक सम्भाव्य संसाधन माना जाता है। इसमें केवल जनसंख्या और उसकी गुणवत्ता को ही नहीं सम्मिलित किया जाता है। अपितु जनांकिकीय विशेषताओं यथा प्रजनन, जन्म व मृत्युदर, स्थानान्तरण एवं स्त्री–पुरूष अनुपात आदि के साथ–साथ जनसंख्या के जैविक, सामाजिक, आर्थिक गुणों एवं संसाधनात्मक विशेषताओं का भी अध्ययन कार्य एवं स्थान के सन्दर्भ में किया जाता है। किसी भी देश के मानव संसाधन के विकास पर ही उस देश के प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग निर्भर होता है। वर्तमान समय में विकसित एवं विकासशील देशों में बढ़ती जनसंख्या के परिणामस्वरूप उत्पन्न सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं से सम्बन्धित अध्ययन पर्याप्त मात्रा में प्रकाश में लाये गये हैं, जिससे भूगोल को एक सामाजिक विज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित किया जा सके।

जनसंख्या– एक परिचय– किसी राष्ट्र के निर्माण एवं आर्थिक विकास में जनसंख्या महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि जनसंख्या वृद्धि की गति तीव्र हो जाती है तो राष्ट्र में अर्थव्यवस्था तथा आर्थिक विकास का आदर्श अनुपात विद्यमान नहीं रहता है, जिससे कई समस्याओं का जन्म होता है। तीव्र जनसंख्या वृद्धि दर, जिसे 'जनसंख्या विस्फोट' कहा जाता है, उस राष्ट्र के

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

आर्थिक विकास में अभिशाप सिद्ध होने लगती है तथा कुपोषण, भुखमरी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार आदि समस्याओं को जन्म देती है। आर्थिक दृष्टि से जनसंख्या का संख्यात्मक एवं गुणात्मक दोनों पहलू महत्वपूर्ण है। किसी राष्ट्र की जनसंख्या का अनुकूलतम आकार अपने संसाधनों के आधार पर देश को सर्वोन्मुखी विकास की ओर अग्रसर करता है।

मानव संसाधन के रूप में जनसंख्या– जिन देशों में पर्याप्त जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करती है, वहाँ मानव संसाधन के सदुपयोग की बात कैसे सोची जा सकती है ?ऐसे देशों में मानव उत्पादक की में उपभोक्ता अधिक होता है। जो देश अपने मानव संसाधनों के उपयोग के लिए व्यवस्था नहीं बना पा रहे हैं, वहाँ स्वभावतः प्रति व्यक्ति आय कम है। कम आय की अवस्था में अनेक कठिनाइयों उत्पन्न होती है, क्योंकि जनसंख्या को उत्पादक बनाने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार आदि के लिए धन की कमी होती है। गरीब देश विदेशी कर्ज से इसीलिए उबर नहीं पा रहे हैं। इनकी विकास योजनाएँ विदेशी कर्ज पर निर्भर होने के कारण वाच्छित लाभ नहीं पहुँचा पाती है। विश्व बैंक की 2020 की रिपोर्ट के अनुसार भारत की प्रतिव्यक्ति आय (GNI) केवल 6390 यू०एस० डॉलर है जबकि जापान की 43760 डॉलर। विश्व में न्यून एवं मध्यम प्रति व्यक्ति आय वाले देशों में अफ्रीका, एशिया व लैटिन अमेरिका के देश अग्रणी है। जहाँ विश्व की 85 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। विश्व बैंक के प्रतिवेदन में अधिक आय वाले देशों की प्रतिव्यक्ति औसत आय 60,000 डॉलर अनुमानित है, जबकि कम आय वाले देशों में यह 650 डॉलर और मध्यम आय वाले देशों का औसत 6500 डॉलर प्रतिव्यक्ति है।

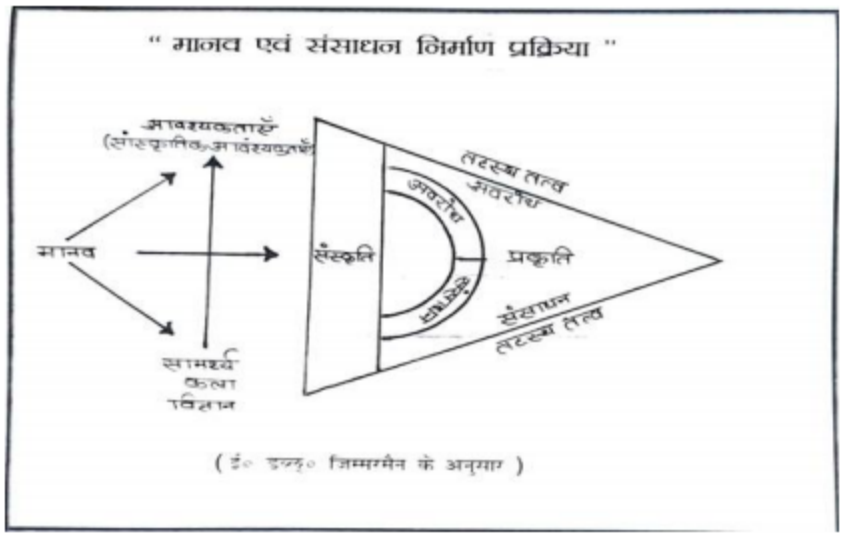

जनसंख्या वृद्धि– जनसंख्या भूगोल में जनसंख्या वृद्धि के अध्ययन का विशेष महत्व है क्योकि जनसंख्या वृद्धि किसी क्षेत्र की आर्थिक प्रगति, सामाजिक उत्थान सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एवं राजनीतिक आदर्श का एक महत्वपूर्ण सूचक है। जनसंख्या वृद्धि जनसांख्यिकीय गतिशीलता का महत्वपूर्ण व केन्द्रीय तत्व है।

जनसंख्या वृद्धि का अध्ययन सामान्यतः धनात्मक एवं ऋणात्मक रूप में किया जाता है। कुछ विद्वान जनसंख्या वृद्धि को जनसंख्या परिवर्तन के नाम से अभिहित करते हैं। यदि अन्तिम जनगणना वर्ष की जनसंख्या पिछली जनगणना से अधिक है तो धनात्मक परिवर्तन तथा कम हो तो ऋणात्मक परिवर्तन कहते हैं।

जनसंख्या की वृद्धि अथवा हास किसी क्षेत्र में जन्मदर व मृत्युदर के द्वारा नियन्त्रित होता है, जिस पर अनेक भौतिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारकों का प्रभाव पड़ता है। इसलिए जनसंख्या भूगोल में जनसंख्या वृद्धि के अन्तर्गत प्रजननता व मर्त्यता का अध्ययन विशेष रूप में किया जाता है।

पृथ्वी पर मानव का विकास आज से लगभग 10 लाख वर्ष पूर्व पुरापाषाण काल में हो चुका था। उस समय विश्व में मनुष्य की कुल संख्या लगभग 1 हजार थी। ईसा के जन्म के समय विश्व की कुल जनसंख्या लगभग 13 करोड़ थी। 1650 में यह बढ़कर 55 करोड़ एवं 1950 में 251 करोड़ हो गयी।

इस प्रकार 300 वर्षों में विश्व जनसंख्या में 4.5 गुना से अधिक वृद्धि हुई है। 1950 से 2000 के मध्य इसमें पुनः लगभग 2.5 गुना की वृद्धि हुई है। इससे स्पष्ट होता है कि जनसंख्या की तीव्र वृद्धि 1600 ई0 में प्रारम्भ हुयी ओर आगे के वर्षों में निरन्तर बढ़ती गयी। 20वीं शताब्दी में विश्व जनसंख्या में सर्वाधिक वृद्धि दर्ज की गयी है, जिसमें अनेक देशों में जनसंख्या वृद्धि की स्थिति विस्फोटक रूप में देखी जा रही है, जो निम्न तालिका से स्पष्ट है –

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

विश्व जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति (1650 से 2020 ई0)

वर्ष	जनसंख्या (करोड़ में)	वृद्धि (करोड़ में)	प्रतिशत वृद्धि
1650	55	–	–
1750	72	17	30.9
1800	93	21	29.2
1850	133	40	43.0
1900	166	33	24.8
1950	251	85	51.2
1960	300	49	19.5
1970	365	65	21.7
1980	440	75	20.5
1990	530	90	20.5
2000	610	80	15.0
2010	690	80	13.1
2020	775	85	12.3

जनसंख्या वृद्धि के प्रादेशिक स्वरूप के आधार पर विष्व को 4 वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

1. उच्च जन्म व मृत्यु दर वाले देश– इसके अन्तर्गत वे देश सम्मिलित है जिनमें जन्म व मृत्यु दर दोनों अधिक है, फलतः वहाँ जनसंख्या वृद्धि दर कम है। इन देशों में जनसंख्या में उतार–चढ़ाव अधिक देखा जाता है। इसमें अधिकतर कृषि प्रधान एवं रूढ़िवादी जीवन दर्शन वाले देश सम्मिलित हैं, जहाँ पर भोजन, आवास एवं चिकित्सा की सुविधा अपेक्षाकृत कम मिलती है। यह स्थिति एक अल्प विकसित या अविकसित अर्थव्यवस्था के लक्षण को दर्शाती है। जन्म एवं मृत्यु दरें दोनों अधिक होने के कारण जनसंख्या मंद गति से बढ़ती है। इन देशों में अकाल, प्राकृतिक प्रकोप, महामारी आदि का प्रभाव भी पाया जाता है। इसमें अफ्रीका के अधिकतर देश लैटिन अमेरिका (अर्जेन्टीना को छोड़कर) पश्चिमी एवं मध्य एशियाई देश सम्मिलित है।

2. उच्च जन्म दर एवं नियन्त्रित मृत्युदर वाले देश– यह अवस्था मुख्यतः विकासशील देशों में पायी जाती है। इनमें आर्थिक विकास की शक्तियों क्रियाशील होती है, किन्तु विकासदर कम होती है। स्वास्थ्य सुविधाओं के प्रसार व बीमारियों के उन्मूलन से मृत्युदर पर नियन्त्रण स्थापित होता है। इन देशों में खाद्य उत्पादन एवं वितरण व्यवस्था समुचित रूप से पायी जाती है। परिणामस्वरूप यहाँ जनसंख्या की वृद्धि तीव्र गति से होती है। इनमें दक्षिणी पूर्वी एवं पूर्वी एशिया (जापान को छोड़कर) देश सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त इसमें पूर्वी अफ्रीका द० अफ्रीका के देश भी आते हैं।

3. घटती जन्मदर एवं मृत्युदर वाले देश– वे देश जहाँ जन्म व मृत्यु दर दोनों नियन्त्रित है, इसके अन्तर्गत सम्मिलित है। परिणामतः जनसंख्या वृद्धि मन्दगति से होती है। इनमें मुख्यतः अर्जेण्टाइना, रूस, पूर्वी यूरोप के देश सम्मिलित है, जिनमें खाद्य एवं पोषण के साधनों की विपुलता है। स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार होने के कारण मृत्युदर कम है। शीत शीतोष्ण कटिबन्ध में स्थित होने के कारण इन देशों में प्रजनन दर भी अपेक्षाकृत कम है। विष्व में जनसंख्या संसाधन सन्तुलन की .ष्टि से यह स्थिति आदर्श कही जा सकती है।

4. न्यून जन्म व मृत्यु दर वाले देश– इन देशों जन्म दर व मृत्यु दर दोनों घट गयी है। फलस्वरूप जनसंख्या वृद्धि न्यूनतम है। इनमें मुख्यतः पश्चिमी यूरोप व उत्तरी अमेरिका के देश सम्मिलित है। जिनमें शैक्षिक स्तर उच्च पाया जाता है। यहाँ नगरीकरण एवं औद्योगीकरण की प्रवृत्ति पायी जाती है। इन देशों में लोगों का जीवन स्तर काफी उच्च है, जिसमें परिजनों की संख्या में वृद्धि आर्थिक भार समझा जाता है। कई देशों में जनसंख्या निरन्तर कम हो रही है, क्योंकि जन्मदर व मृत्युदर से भी कम है। इन देशों में जीवन प्रत्याशा बहुत उच्च पायी जाती है।

वस्तुतः विश्व के देशों को जनसंख्या वृद्धि दर की दृष्टि से विभाजित करने के बहुत ही कठिन कार्य है। क्योंकि जनसंख्या सम्बन्धी समस्याओं से ग्रस्त होने एवं आर्थिक विकास की तीव्र इच्छा के कारण मानव समाज के दृष्टिकोण में परिवर्तन आता रहता है। 20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में चीन एवं जापान जैसे कई देशों में जनसंख्या वृद्धि तीव्र थी, वर्तमान समय में जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश होने के कारण जनसंख्या लगभग स्थिर अवस्था में पहुँच गयी है। अंगोला, इथोपिया और कीनिया जैसे अफ्रीकी देशों मैक्सिको, निकारागुआ, ब्राजील जैसे लैटिन अमेरिकी देशों में जनसंख्या की वृद्धि दर अति उच्च पायी जाती है। जबकि यू०एस०ए०, कनाडा, आस्ट्रेलिया, यू०के०, फ्रांस, जापान, इटली आदि विकसित देशों में वृद्धि दर बहुत ही न्यून है। रूस एवं जर्मनी आदि देशों में जनसंख्या वृद्धि ऋणात्मक है ।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

जनसंख्या एवं आर्थिक विकास – विश्व का प्रत्येक देश आर्थिक दृष्टि से उन्नति का आकांक्षी है। आर्थिक उन्नति के लिए प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि एवं संसाधन सम्पन्नता आवश्यक होती है। इस दृष्टि से जनसंख्या एवं आर्थिक विकास में घनिष्ठ सम्बन्ध है। झिंगन (2014) के अनुसार आर्थिक विकास अल्प विकसित देशों की समस्याओं से सम्बन्धित है। वणिकवादियों ने देश में सोना चाँदी के भण्डारों को आर्थिक विकास का परिचायक माना तो प्रकृतिवादियों ने समुन्नत कृषि को आर्थिक विकास का द्योतक माना है। शर्मा (1975) के अनुसार आर्थिक विकास एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक अर्थव्यवस्था की वास्तविक आय ने दीर्घकालीन वृद्धि होती है। सुन्दरम (1985) के अनुसार आर्थिक विकास का अभिप्राय धन के विनियोग द्वारा उत्पादन के साधनों की वृद्धि करने से है, जिनसे प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि सम्भव होती है। इस प्रकार आर्थिक विकास एक दीर्घकालीन प्रक्रिया है, जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्रीय आय में निरन्तर वृद्धि होती है।

जनसंख्या आर्थिक विकास का साधन व साध्य दोनों ही है। किसी देश के आर्थिक विकास हेतु अनुकूलतम जनसंख्या का होना आवश्यक है। मनुष्य ही अपनी शारीरिक क्षमता एवं बौद्धिक कुशलता से भौतिक संसाधनों का उपयोग कर आर्थिक संसाधनों का विकास करता है, जिस पर मानव समाज का जीवन स्तर निर्भर करता है। उत्पादन के साधन के रूप में श्रम का विशेष महत्व है। इसका कारण यह है कि जनसंख्या में वृद्धि के परिणामस्वरूप उपभोग की मात्रा में भी उसी अनुपात में वृद्धि होती है। आर्थिक विकास की गति का प्रत्यक्ष सम्बन्ध पूंजी निर्माण से है तथा पूंजी निर्माण की दर, उत्पादन व उपभोग की मात्रा पर निर्भर होती है। उत्पादन तथा उपभोग के स्तर में अन्तर के द्वारा ही आर्थिक विकास की गणना की जा सकती है।

जनसंख्या वृद्धि का आर्थिक विकास पर प्रभाव – जनसंख्या वृद्धि का आर्थिक विकास पर प्रायः प्रतिकूल प्रभाव देखा जाता है। रोजगार के नये अवसरों की खोज, उत्पादकता में वृद्धि, तकनीकी कुशलता व कार्य क्षमता में वृद्धि के द्वारा एक सीमा तक जनसंख्या वृद्धि का आर्थिक विकास पर पड़ने वाले कुप्रभाव को रोका जा सकता है। जनसंख्या वृद्धि का किसी स्थान के आर्थिक विकास पर पड़ने वाले दुश्प्रभाव को निम्नवत् रेखांकित किया जा सकता है।

- प्रति व्यक्ति आय में कमी एवं जीवन स्तर से ह्रास।
- प्रति व्यक्ति उपभोग के स्तर में ह्रास।
- वस्तुओं की आपूर्ति में कमी।
- बेरोजगारी एवं आश्रित जनसंख्या में वृद्धि।
- वस्तुओं की माँग में वृद्धि होने से मूल्य वृद्धि।
- जनसंख्या का रोजगार हेतु महानगरोन्मुख पलायन।
- महानगरों में जनसंख्या समूहन एवं पर्यावरणीय गुणवत्ता में ह्रास।
- खाद्य साधनों की कमी एवं पोषण की समस्या।
- राष्ट्रीय आय का अधिकांश भाग अवस्थापनात्मक तत्वों के विकास में लगता है, जिससे राष्ट्रीय सम्पत्ति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- राष्ट्रीय उत्पादन का अधिकांश भाग जनसंख्या के भरण–पोषण में लग जाता है, जिससे वस्तुओं के निर्यात पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- देश में उत्पादित न होने वाली वस्तुओं के आयात में वृद्धि होने से विदेशी मुद्रा कोष में कमी आती है।
- राष्ट्र के अधिकांश संसाधन शिक्षा व स्वास्थ्य जैसी सुविधाओं के विकास में लग जाते हैं, जिससे अर्थव्यवस्था पर कुप्रभाव पड़ता है।
- महानगरीय क्षेत्रों में उच्च जनघनत्व के कारण अनेक पर्यावरणीय समस्याओं का जन्म होता है, जिससे जीवन की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हैं।

झिंगन के अनुसार "अल्पविकसित/विकासशील देशों में दो–तिहाई या इससे भी अधिक लोग ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं और कृषि उनका प्रमुख व्यवसाय होता है। उन्नत देशों में जितने लोग कृषि करते हैं, अल्पविकसित देशों में उससे चार गुना लोग कृषि में लगे होते हैं। भारत चीन, बांग्लादेश तथा सूडान में 70 प्रतिशत जनसंख्या कृषि में लगी है, जबकि अमेरिका, कनाडा और जर्मनी में यह प्रतिशत क्रमशः 10, 2 एवं 1.16 है। कृषि में जनसंख्या का इतना अधिक संकेन्द्रण दरिद्रता का चिन्ह है। प्रमुख व्यवसाय के रूप में कृषि सामान्यतः अनुत्पादक है। अधिकतर देशों में कृषि परम्परागत ढंग से पिछड़े हुए तरीकों से की जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि उत्पादन सामान्यतः कम होता है और किसान जीवन निर्वाहक कृशि में संलग्न रहते है। हाल के वर्षों में कई विकसित एवं विकासषील देशों में कृषि की आधुनिक तकनीकें अपनाने से कृषि उत्पादन में बहुत वृद्धि हुई है।" जनसंख्या आधिक्य की समस्या से ग्रस्त भारत जैसे अनेक विकासशील देशों में आर्थिक विकास में अनेक बाधाएं प्रस्तुत होती है,

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

क्योंकि राष्ट्र के अधिक से अधिक संसाधन जनता की खाद्य एवं पोषण सम्बन्धी आवष्यकताओं की पूर्ति में ही लग जाते हैं, जिससे प्रति व्यक्ति आय में निरन्तर कमी होती है।

निष्कर्ष– उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि किसी क्षेत्र की अनुकूलतम जनसंख्या ही वहाँ की सबसे महत्वपूर्ण संसाधन है। तात्पर्य यह है कि जनसंख्या अपने निवास क्षेत्र के संसाधनों के उपयोग में पूर्णतः सक्षम हो तथा उस पर भार स्वरूप न हो। जौनपुर जनपद में जनसंख्या की संसाधनता में क्रमशः वृद्धि हो रही है। यहाँ पिछले दशकों की अपेक्षा जनसंख्या वृद्धि दर में कमी हो रही है। जनघनत्व के साथ ही कृषि घनत्व, कायिक घनत्व, पोषण घनत्व में भी निरन्तर कमी आ रही है। इससे स्पष्ट है कि प्रति इकाई संसाधनों पर जनसंख्या का भार निरन्तर कम हो रहा है। साक्षरता दर में वृद्धि की प्रवृत्ति दृष्टिगत हो रही है। वर्ष 2001 के पश्चात स्त्री साक्षरता में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इस जनपद में स्त्री–पुरुष अनुपात प्रदेश में सर्वाधिक है। इससे स्पष्ट है कि यहाँ लैंगिक भेदभाव नहीं है जो सामाजिक विकास का द्योतक है। पुरुषों के साथ स्त्रियाँ भी शैक्षणिक एवं व्यावसायिक कार्यों में संलग्न है एवं कार्यरत जनसंख्या पर आश्रितों की संख्या में निरन्तर कमी होने से जनपद की संसाधनता में क्रमशः वृद्धि हो रही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Dixit, Anupama (2003) रू जौनपुर जनपद (उ0प्र0) में जनसंख्या वृद्धि प्रतिरूप, उत्तर भारत भूगोल पत्रिका, अंक 39, सं0 1–2, पृ0 115–119
2. Gill, Richard (1963) : Economic Development : Past & Present, PrenticeHall, Michigan.
3. Jhingan, M.L. (2014) : Princples of Economics, IInd Edition Oxford University Press.
4. Sharma, R.C. (1975) : Population Trends, Resources & Environment, Handbook on Population Education, Delhi.
5. Singh, O.P. (1973) : Population Geography of Uttar Pradesh, Ph.D. Thesis, B.H.U. Varanasi.
6. Sunderam, K.V. et al (1985) : Population Geography, Heritage Publicaitons, New Delhi.
7. Zimmerman, E.W. (1951) : World Resources & Industries, Harper & Row, New York.

*****